नाटक

DATE NOTES

जिन मंदिर भिक्षालय नहीं शिक्षालय है।

पात्र :- (i) विद्यार्थी, (iv) बेरोजगार,
(ii) व्यापारी, (v) रिश्वतखोर,
(iii) युवा, (vi) नायक।

1. विद्यार्थी :-

O' MY God! good morning

हे प्रभो! आनन्ददाता, ज्ञान हमको दीजिए।
मुझको कुछ आता नहीं, फिर भी पास कीजिए।

हे भगवान! देखो, आपको पता ही है कि मैं क्रिकेट का फैन हूँ और अभी भारत-पाकिस्तान की श्रृंखला चल रही है, तो समझलो कि भारत की इज्जत दांव पर लगी है। अतः मैच देखना बहुत ही जरूरी है और आपको तो पता ही है कि बोर्ड की परीक्षा सिर पर है। पढ़ाई तो हो नहीं पा रही है। पढ़ाई करूं कि मैच देखूं। तो हे भगवान! सम्हाल लेना। मेरी इज्जत आपके ही हाथों में है। मैं अपनी पॉकेट मनी में से 21 रु. दानपात्र में जरूर डालूंगा। याद रहे भगवान। भूल मत जाना।

Good bye!

Scanned by CamScanner

DATE NOTES

2. व्यापारी :— अति पुण्य उदय मम आया।
सौ-सौ की गड्डी पाया।
चत्तारि मंगलं, सोना मंगलं, चांदी मंगलं।
रूपया मंगलं, ड्राफ्ट मंगलं।

हे भगवान! आप नाराज क्यों हो गये हो। इस बार बिल्कुल भी सीजन नहीं चल रहा है। अरे! आपको चाँवल चढ़ा सकूं इतनी भी कमाई नहीं हो पा रही है। अरे! जब आप हमें खाना-खाने को नहीं मिलेगा तो हम आपको क्या चढ़ावे? भगवान जरा दया करो। आप दया निधान हो। हमारी दुकान अच्छी चलने लग जावे और अपने मजे हो जावे। भगवान अपनी यह बात पक्की रही कि अपने मजे तो आपके मजे। एक जोरदार विधान कराऊंगा। अब तो अन्तरीक्ष पार्श्वनाथ हम तुम्हारे ही भरोसे है।

3. रिश्वतखोर :—

हे भगवान! आप तो सर्वज्ञ हैं। मैंने जो अर्जी लगाई है। आप तो समझ ही गये होंगे। समझे न हो तो भगवान मैं फिर से बता रहा हूँ कि मैं तो रिश्वतखोरी के चक्कर में पकड़ा गया हूँ। लोगों ने कह दिया है कि मैंने एक लाख रुपये की रिश्वत ली है मगर

DATE NOTES

राज की बात बताऊं भगवान ली तो दो लाख की है। पर आप ही इस झंझट / मुसीबत से छुड़वा सकते हो। अगर मैं कोर्ट में बाइज्जत बरी हो गया तो 10% आपको दूंगा व 33% छत्र ही चढ़ाऊंगी भी।

4. बेरोजगार :— इधर-उधर देखते हुये....

वाह-भगवान वाह! आपके मंदिर में फर्श मार्बल का, दीवारों पर ऑयलपेंट, वेदी पर सोने का पेंट छत्र चंवरादि चांदी के क्या कहना भगवान...? अपरिग्रही भगवान के पास इतना परिग्रह और एक मैं आपका भक्त बेरोजगार घूम रहा हूँ। किसी से मत कहना भगवान ये ड्रेस भी मैंने दूसरों की पहन रखी है। अरे भगवान! कुछ तो सोचो हमारे बारे में, हम जैसे बेरोजगारों पर कृपा करो। बस एक छोटी-सी नौकरी दिला दो भगवान! पहली वेतन आपको ही चढ़ाऊंगा। ज्यादा क्या कहूँ भगवान और तो आप समझ ही गये होंगे।

5. युवा :— तुमसे लागी लगन, ले लो अपनी शरण।
पारस प्यारा, तुम तो रखो दो ख्याल हमारा।।
हे पारसनाथ भगवान! मैं कब से

DATE NOTES

रविवार का व्रत कर रहा हूँ। पर आप हो कि सुनते ही नहीं हो। अरे ! मैं एक शादी ही तो कह रहा हूँ। भगवान आपकी ही कृपा से चक्रवर्तियों की तो 96-96 हजार शादियाँ हो गई मेरी एक भी एक नहीं करवा सकते? अरे ! मुझे पता है आपकी शादी नहीं हुई तो क्या हुआ? भक्तों पर दया तो करनी ही चाहिये। हे चिन्तामणि पार्श्वनाथ ! दया करो। किसी कन्या को मेरे ऊपर प्रसन्न करवा दो।

6. ज्ञायक :— अभी आपने देखा कि कितने भक्त आये और वीतरागी भगवान से अपने-अपने राग की बातें कहकर चले गये। ये तो गाँव-गाँव, घर-घर की कहानी है। दर्शन करने आते हैं जैन कहलाते हैं। भगवान के नाम पर से और जैन से किराना भण्डार, बर्तन भण्डार, वस्त्र भण्डार चलाते हैं। पर देवदर्शन की विधि क्या है यह भी ठीक ढंग से नहीं जानते हैं।

कोई एक :— तो आप ही बता दो देवदर्शन की विधि क्या है?

ज्ञायक :— देव दर्शन की विधि बतायेगा।

DATE NOTES

कोई एक :— स्वाध्याय करने से क्या लाभ है?

ज्ञायक :— स्वाध्याय करने से हिताहित, भक्ष्याभक्ष्य, पूज्यापूज्य का ज्ञान होता है। षट् द्रव्य व सात तत्व का ज्ञान पूर्वक भेदज्ञान से सम्यग्दर्शन प्राप्त होता है।

सभी एक साथ :— भैया आपने तो हमारी आंखें खोल दी।

ज्ञायक :— भैया आप सब लोग भी मांग लेकर भगवान के पास आते हैं लेकिन भगवान न लेते है और न देते है। हम जैन हैं हमें जैन का सच्चा स्वरूप नहीं मालूम, जिनवाणी मिली, उत्तम कुल मिला फिर भी धर्म से वंचित हो रहे हैं। हमसे अभागा कौन है? अर्थात् कोई नहीं।

यह मानुष पर्याय :- — — —

जय जिनेन्द्र

DATE

भेद विज्ञान

पं० राजकुमार जी शास्त्री

NOTES

पात्र परिचय

धनिया – धोबी
अगम – शान्त प्रकृति का युवक
ज्ञानेश – पण्डित जी
दिव्यांश – किंचित् उद्दंड प्रकृति वाला युवक
चिन्मय – विज्ञान मित्र.

(धोबी की दुकान – धनिया गुनगुना रहा है)

धनिया – धनिया धोबी मेरा नाम,
कपड़े धोना मेरा काम।
मैल को भगाऊं, दाग को मिटाऊं, कपड़ों को चमकाऊं
हो... हो..... धनिया धोबी....

(प्रेस करते हुये) — ये सेठ लोग कितने गंदे कपड़े कर लेते हैं। इन्हें धोते-धोते मेरे पप्पू की अम्मा आधी घिस गई है।

दिव्यांश – (आते हुए) अरे भइया धनिया।

धनिया – कहिए भाई साहब क्या सेवा करूं?

दिव्यांस – अरे भई, मैं परसों एक चादर धोने को दे गया था। वह तैयार कर दिया क्या?

धनिया – अरे बिल्कुल तैयार है साब, एकदम सफासफ रह रही।

दिव्यांस – ठीक है लाओ इधर, पैसे बाद में पहुंचा दूंगा।

धनिया – कोई बात नहीं भाई साहब पैसे तो आते रहेंगे।

(दिव्यांस चादर लेकर एक तरफ को जाता है)

DATE

NOTES

धनिया – (प्रेस कर रहा है एवं गुनगुना रहा है।)
धनिया धोबी मेरा नाम,
कपड़े धोना मेरा काम।
मैल को भगाऊं.... (पंक्ति-गीत लेना)

(अगम को आता देखकर)

धनिया – जय जिनेन्द्र अगम भाई साहब। आप तो बहुत दिनों बाद नजर आ रहे हैं कहीं बाहर गए थे क्या?

अगम – हां भाई धनीराम! बाहर ही गया था और आज फिर जयपुर जाना है। धनीराम मैं एक चादर धुलवा गया था, वह तैयार कर दिया।

धनिया – भाई साहब, धनिया समय का पाबंद है। आपकी चादर तो कब से तैयार है, यह लीजिए। (चादर उठाकर देता है।)

अगम – (अच्छी तरह चादर देखते हुए।)
अरे धनीराम! यह चादर मेरा नहीं है। दूसरा दिखाओ यह और किसी का होगा।

धनिया – अरे बाप रे भूल हो गई, अभी-अभी दिव्यांस भाई साहब एक चादर ले गए हैं उनका भी बिल्कुल ऐसा ही था। कल मैं चादर बदल कर दे दूंगा।

अगम – अरे नहीं भइया, मुझे तो अभी रात को जयपुर जाना है। मुझे चादर बहुत जरूरी है।

धनिया – तो भाई साहब आप ही जरा तकलीफ कर उनके वहां से बदलते हुए चले जाना।

अगम – हां यह ठीक है।

Scanned by CamScanner

DATE NOTES

(दिव्यांस के घर जाकर)

अरे कोई है ..... दिव्यांस ओ दिव्यांस —
(कोई आवाज नहीं आती तो अंदर आता है)

अच्छा तो भाई साहब चादर तानकर सो रहे हैं। दिव्यांस ओ दिव्यांस। (चादर खींचता है)

दिव्यांस — (गुस्से में, आंखें मलते हुए)
कौन बेवकूफ मेरी नींद खराब कर रहा है?

अगम — अरे भइया नाराज मत होओ, मैं तो अपनी चादर लेने आया हूं।

दिव्यांस — दिमाग तो खराब नहीं हो गया। एक तो मेरी नींद खराब कर दी आकर, आ हा.... क्या मजा आ रहा था। दूसरे कह रहे हो कि अपनी चादर लेने आया हूं यह कोई कपड़े की या धोबी की दुकान है क्या?

अगम — अरे नहीं भइया, ये जो चादर तुमने ओढ़ी है, वो ~~मेरी~~ चादर मेरी है।

दिव्यांस — लो कर लो बात। अब साहब मेरी चादर को अपनी बताने लगे, हद हो गई, फिर कहना ये घर भी मेरा है। अरे भइया, ये चादर तो मैं ~~भी~~ धनिया के यहां से धुलाकर लाया हूं।

अगम — देखो धनिया ने ही कहा है कि मेरा चादर तुम्हारे पास है।

दिव्यांस — देखो एक बार में ही समझलो कि यह चादर मेरा है।

DATE NOTES

अगम — तुम भी अच्छी तरह समझलो कि यह चादर मेरा है। (चादर खींचता है)

दिव्यांस — नहीं मेरा है। देखो लड़ाई हो जायेगी मैं कहता हूं चादर मेरा है। (आपस में चादर खींचते हैं)

(इतने में चिन्मय व ज्ञानेश का प्रवेश)

चिन्मय — अरे यह क्या महाभारत मचा रखी है।

अगम — देखो भाई साहब यह मेरा चादर नहीं दे रहा है।

दिव्यांस — बड़ा अंधेर है भाई मेरे घर पर आकर मुझे ही चोर बना रहा है। गुस्सा तो ऐसा आ रहा कि सिर फोड़ कर रख दूं।

चिन्मय — चुप रहो फालतू की बातें मत करो। अच्छा अगम ये बताओ कि तुम्हारी चादर यहां कैसे आई?

अगम — मैंने अपनी चादर धनिया के यहां धुलने डाली थी। मैं वहां चादर लेने गया तो मेरा चादर गलती से इनके यहां आ गया।

दिव्यांस — अच्छा तो तुम्हारी चादर की कोई पहचान है।

अगम — हां यह देखो चादर पर मेरा नाम लिखा है।

(सभी चादर देखते हैं)

चिन्मय — अरे! इस पर तो अगम का ए.टी लिखा हुआ है।

दिव्यांस — यह तो सच में इसका ही है, तो फिर मेरा चादर कहां है?

DATE

NOTES

अगम - तुम्हारा चादर यह रहा। तुम तो मेरी बात सुन ही नहीं रहे थे। मैं तुम्हारा चादर धनिया के यहाँ से लेकर आया हूं।

दिव्यांस - मुझसे बड़ी भूल हो गई। मैं आपकी चादर को अपनी मानकर व्यर्थ ही झगड़ा कर रहा था। आप कृपया मुझे क्षमा कर देवें।

चिन्मय - अरे भाइयो! ऐसी ही भूल हम सब अनादि से कर रहे हैं। पर पदार्थों को अपना मान-मान कर।

अगम - क्या बात कर रहे हो मैं तो किसी की चीज को हाथ भी नहीं लगाता।

चिन्मय - भइया अगम, यह बात इतनी जल्दी समझ में नहीं आ जायगी। इसे तो गंभीरता से समझना पड़ेगा।

चिन्मय - देखो हमारे साथ यह जो अतिथि भाई साहब आये हुए हैं इनका नाम ज्ञानेशकुमार है, यह ध्रुवधाम से आये हैं, इस संबंध में येही हमें समझायेंगे।

ज्ञानेश - जय जिनेन्द्र! मैंने आपकी सभी बातें सुनी हैं जिस तरह दिव्यांस आपकी चादर को अपनी मानकर सो रहा था, उसी तरह हम सब भी दूसरी वस्तुओं को अपना मानकर सो रहे हैं।

दिव्यांस - क्या बात कर रहे हो भाई साहब, सोता मैं पहले रहा था, अभी तो मैं जाग रहा हूं।

DATE

NOTES

ज्ञानेश - नहीं भइया! अभी तो आपकी द्रव्य निद्रा टूटी है भाव निद्रा जिसे मोह नींद कहते हैं वह नहीं टूटी।

अगम - इस मोह नींद से क्या होता है?

ज्ञानेश - जैसे दिव्यांस द्रव्यनिद्रा में तुम्हारे चादर को अपनी मानकर सो रहा था। वैसे ही हम सब मोह नींद में शरीर, धन पुत्रादि, पर पदार्थों को अपना मानकर सो रहे हैं।

चिन्मय - यह बात पूरी तरह समझ में नहीं आई, जरा अच्छी तरह समझाओ न।

ज्ञानेश - अच्छा सुनो! आप सब अपना नाम तो जानते ही होंगे।

दिव्यांस - हां-हां क्यों नहीं. मेरा नाम दिव्यांस है।

ज्ञानेश - और तुम्हारा?

अगम - मेरा नाम अगम है।

ज्ञानेश - ये तो आपने इस शरीर के नाम बताए हैं, आप अपना नाम बताइए न।

दिव्यांस - लो कर लो बात। क्या मैं और मेरा शरीर अलग-अलग थोड़े ही हैं। हम दोनों एक ही तो हैं।

ज्ञानेश - नहीं भइया! यही तो हमारी भूल है जो अनादिकाल से चली आ रही है और इस भूल के कारण ही हमें नरक तिर्यंच आदि गतियों के दुख उठाना पड़ रहे हैं।

दिव्यांस - ये बात तो समझ में नहीं आई। ठीक है चादर में तो आपने चिन्ह दिखाकर समझा दिया कि वह चादर मेरा नहीं है। पर शरीर तो मैं ही हूं। इस पर तो मेरा ही अधिकार है।

DATE NOTES

ज्ञानेश- देखो समझने से समझ में आता है समझाने से नहीं। आप समझने की कोशिश करोगे तो जरूर समझ में आयगा। अच्छा यह बताओ कि जीव किसे कहते हैं?

आगम- अरे जो जानता-देखता और सुख-दुख का अनुभव करता है वही तो जीव है।

ज्ञानेश- और पुद्गल?

चिन्मय- जिसमें स्पर्श, रस, गंध और वर्ण पाया जाए उसे पुद्गल कहते हैं।

ज्ञानेश- बहुत बढ़िया, आप सबको तो सब याद है। अच्छा दिव्यांस तुम बताओ; तुम्हारा रंग कैसा है?

दिव्यांस- मेरा रंग गोरा है।

ज्ञानेश- और वजन कितना है?

दिव्यांस- 45 किलो।

ज्ञानेश- अब बताओ कि गोरा, काला रंग, हल्का भारी वजन, सुगंध-दुर्गन्ध यह सब किसमें पाये जाते हैं?

दिव्यांस- अभी-अभी तो चिन्मय ने बताया था कि स्पर्श-रस-गंध ये सब पुद्गल में पाए जाते हैं मुझे इतना भी याद नहीं रहता क्या?

ज्ञानेश- तो फिर यह कैसे भूल रहे हो कि गोरा रंग और 45 किलो का वजन पुद्गल का है, जीव का नहीं।

चिन्मय- अरे हां यार! ये बात तो सच्ची है कि यह सब तो पुद्गल है पुद्गल का है। तो फिर मैं कौन हूं?

DATE NOTES

ज्ञानेश- जैसे शरीर की अपनी पहिचान है उसी तरह जीव की भी अपनी पहिचान है वो है जानना देखना। हम सब जानते देखते हैं इसलिए हम जीव हैं शरीर नहीं।

दिव्यांस- क्या बात है ज्ञानेश भाई साब। आपने तो सच्ची में हमें जगा दिया। हम तो अभी तक शरीर और जीव दोनों के गुणों को अपना ही मान कर सो रहे थे।

ज्ञानेश- शरीर, धन परिवार को तो छोड़ें हमारे भीतर जो राग-द्वेष गुस्सा के भाव होते हैं वो भी जीव नहीं है जीव का स्वभाव नहीं हैं।

चिन्मय- पर उन सब भावों को तो हम ही कर रहे हैं।

ज्ञानेश- प्रेम का भाव हो या क्रोध का या मान का लोभ का या दया दान का यह सब जैसा संयोग होता है वैसे होते हैं और हमारी अज्ञानता से होते हैं। अतः शरीरादि पर पदार्थों के कारण होने वाले होने से और दुख के कारण होने से वह भी जीव नहीं है।

चिन्मय- पर भाई साहब पुण्य भाव तो मुनिराज के भी होते हैं।

ज्ञानेश- मुनिराज के पुण्य भाव होता जरूर है पर उसे वह अपना नहीं मानते उन भावों पर भावों पर रीझते नहीं हैं। वह उसे अपना दोष मानकर आत्मा में ही लीन होते हैं।

आगम- आज तो आपने भेदज्ञान का बड़ा ही सुन्दर स्वरूप समझाया है। पर यह भेदज्ञान होगा कैसे?

Scanned by CamScanner

DATE NOTES

ज्ञानेश → जब हम प्रतिदिन स्वाध्याय करेंगे, चिंतन करेंगे, मनन करेंगे, तत्त्व का अभ्यास करेंगे तो यह भेदज्ञान अवश्य एवं जल्दी ही होगा।

श्रेयांस → क्यों अगम भैया कुछ समझ में आया अब तो आप चिन्मय के साथ रोजाना स्वाध्याय में जाना।

अगम → मैं तो जाऊंगा ही और तुझे भी साथ में ले चलूंगा।

श्रेयांस → क्यों नहीं मैं भी जरूर चलूंगा।

ज्ञानेश → ये हुई न कोई बात। आओ हम सब भेदज्ञान प्राप्त करके मोक्षमहल में चलें। बीच में पुण्य-पाप के भाव आवें तो उन्हें अपने ज्ञानभाव से नष्ट कर मुक्ति मार्ग में बढ़े चलेंगे।

धनिया → (दौड़कर आते हुए) अरे भाइयो! हमें यहीं संसार में ही छोड़ दोगे क्या? हमें भी तो साथ में ले चलो।

ज्ञानेश → अरे भइया! जिनवाणी तो हम सबको मुक्तिमार्ग में चलने का आमन्त्रण देती है।

चलो हम सब चलें (सब मिलकर गाते हैं)

मुक्ति मार्ग प्राप्त कर बढ़े चलो बढ़े चलो।
रुको न एक क्षण कभी बढ़े चलो बढ़े चलो।
ये विकार मार्ग में बदल-बदल कर आयेंगे।
भेष पुण्य का बना, तुझे सदा रिझायेंगे।
शत्रु जानकर इन्हें दले चलो दले चलो......।
मुक्तिमार्ग प्राप्त कर बढ़े चलो बढ़े चलो ॥

महावीर भगवान की जय हो।

४९ नाटक :- जीव है सो मैं ही हूँ।

DATE NOTES

मिश्र एक लेखिका :- ब्र. डॉ. आरती जैन

पात्र → दस विद्वान

पहला मित्र → चलो भाई! कहीं तीर्थ वंदना को चलते हैं।

दूसरा मित्र → हाँ भाई! विचार तो बहुत अच्छा है, चलो चलते हैं।

तीसरा मित्र - पर मित्र! ये तो बताओ कौन-से तीर्थ चलने का विचार है?

चौथा मित्र - मेरा तो विचार है कि पार्श्वनाथ भगवान के दर्शन करने बनारस नगरी चलते हैं।

(सभी मित्र एक साथ - हाँ - हाँ बनारस नगरी ही चलते हैं)

पाँचवा मित्र - (छटवे मित्र से) - चेतन! ऐसा करना तुम आज ही नाव वाले से बात कर लेना, रात्रि - 07 बजे हम सब निकल जायेंगे।

छटवा मित्र - ठीक है मित्र! मैं नाव वाले से बात कर लूँगा।

सातवा मित्र - तो मित्रों आज शाम हम सभी गंगा के घाट पर मिलते हैं - जयजिनेन्द्र

(प्रत्युत्तर - समवेत स्वर में जयजिनेन्द्र)

(~~सभी~~ एक चक्कर लगाकर)

(सभी मित्र नाव में एक के पीछे एक बैठ

DATE NOTES

जायेंगे, चार मित्रों के हाथ में हॉंड रहेगा, जिसे वे एक्टिंग कर चलायेंगे।)

यात्रा प्रारंभ करते समय - बोलो पार्श्वनाथ भगवान की जय।

आठवाँ मित्र - मित्रों! बनारस पहुँचने में बहुत समय लगेगा ..... ऐसा करते हैं - समय बिताने के लिए कुछ करते हैं।

नौवाँ मित्र - ठीक है भाई! अन्ताक्षरी खेलते हैं

दसवा मित्र - शुरू करो अंताक्षरी लेकर प्रभु का नाम
समय बिताने के लिए करना है कुछ काम। - म से बोलो

पहला मित्र - मीठे रस से भरी जिनवाणी लागे,
जिनवाणी लागे। मने आत्मा की बात
घणी प्यारी लागे।।

दूसरा मित्र - गा रे भैया, गा रे भैया, गा रे भैया गा
प्रभु गुण गा तू समय न गवा।। ..

तीसरा मित्र - बनारस वाले [2] पार्श्वनाथ हमारे
बनारस वाले।
वामादेवी घर जन्म लियो है, माता की
कोख को धन्य कियो है
अश्वसेन की आंखों के तारे [2]
पार्श्वनाथ हमारे, बनारस वाले ...

चौथा मित्र - बाजे कुण्डलपुर में बधाई की नगरी
में वीर जन्मे - 2 महावीर जी

पृ 51

DATE NOTES

पाँचवाँ मित्र - जीयरा हो हो जीयरा - 2
जीवराज उड़ के आओ सम्मेद शिखर
भाव सहित वंदन करो पार्श्वचरण में।।
जीयरा हो हो जीयरा - -

छटवाँ मित्र - रंगमा - रंगमा - रंगमा रे।
प्रभु तारा ही रंग मा रंग गयो रे।।

सातवाँ मित्र - रोम - रोम से निकले प्रभुवर
नाम तुम्हारा हो नाम तुम्हारा।।

आठवाँ मित्र - रोम - रोम पुलकित हो जाये।
जब जिनवर के दर्शन पाये।।

नौवा मित्र - ये धर्म है आतमज्ञानी का,
सीमंधर महावीर स्वामी का,
इस धर्म का भैया क्या कहना,
ये धर्म है वीरों का गहना ..
जय हो -

दसवा मित्र - होली खेली मुनिराज, शिखरवन में,
रे अकेले वन में, मधुवन में ....

पहला मित्र - (इशारा करते हुए) - अरे, अरे!
मित्रों! देखो बनारस नगरी आ गई।
बोलो - पार्श्वनाथ भगवान की जय।
(नाव से उतर कर खड़े होजाते हैं)

दूसरा मित्र - देखो मित्रो! नगरी में जाने से पहले
एक बार गिनती कर लें, पूरे हैं कि नहीं।

तीसरा मित्र - चलो मैं गिनता हूँ, ... (गिनेगा)

DATE NOTES

एक - दो - तीन ... - नौ।
अरे! अरे! रे ये क्या हुआ, जब हम गांव से निकले थे तो पूरे दस थे, लेकिन अब नौ ही बचे....।

चौथा मित्र - अरे भाई! तुमने अच्छे से नहीं गिना, मैं गिनता हूँ ...
एक - दो ...... नौ, अरे नौ ही हैं...

पाँचवा मित्र - अरे, अरे! लगता है तुम दोनों को ही गिनना नहीं आता - मैं अंग्रेजी में गिनता हूँ, वन - टू --- नाइन
अरे क्या बात है, नाइन ही हैं।

छटवा मित्र - अरे लगता है, रास्ते में अपना एक मित्र डूब गया। ... ऊं ऊं ऊं।
(सब मित्र रोने लगते हैं।)
(तभी वहां से एक पंडितजी निकलते हैं।)

पण्डितजी - क्यों भाई क्या बात है? तुम सब रो क्यों रहे हो?

सातवां मित्र - क्या बताये! हमारा एक मित्र गंगा में डूब गया।

पण्डित जी - क्या ...? गंगा में डूब गया, कब डूबा?

DATE NOTES

आठवा मित्र - ये तो हमें नहीं मालूम लेकिन हम अपने गाँव से दस मित्र आये थे, अब नौ ही बचे।

पण्डित जी - अच्छा - अच्छा मैं समझ गया, चलो कोई बात नहीं मैं एकबार गिनता हूँ। देखो एक - दो --- दस। देखो तुम लोग तो पूरे दस हो। तुम दूसरों को तो गिन रहे थे, लेकिन स्वयं को गिनना भूल जा रहे थे, इसलिए दुखी हो रहे थे।

सिद्धान्त ⇒ इसी प्रकार यह जीव, जीव को जानने के नाम पर जीव द्रव्य, जीव तत्व, जीव पदार्थ, जीवास्तिकाय आदि सभी को जानता है। जीव के सभी भेद संसारी - मुक्त, त्रस - स्थावर, गुणस्थान, मार्गणास्थान, जीवसमास, सभी कुछ सीख लेता है, जीव की परिभाषा भी रट लेता है, लेकिन वह ज्ञान - दर्शन को धारण करती हुई वस्तु मैं स्वयं हूँ, जीव है सो मैं ही हूँ, ऐसी प्रतीति नहीं करता, ऐसा भाव भासन नहीं करता, इसलिए संसार में परिभ्रमण कर दुःखी होता है यदि स्वयं को जान ले तो, परम सुखी हो जावे।